11

उद्धारकर्ज़ा को ढूंढ़ना

मत्ती 2:1-13, एक निकट दृष्टि

लोग जीवन में प्रसिद्धि, अच्छा भविष्य और प्रसन्नता जैसी कई चीज़ें पाना चाहते हैं। परन्तु यीशु के शब्दों में कहें तो ''केवल एक बात आवश्यक है'' (लूका 10:44क) और वह है प्रभु को ढूंढ़ना। पौलुस ने मार्स पहाड़ी पर अपने सुनने वालों को बताया था कि प्रभु ''आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। ... कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें'' (प्रेरितों 17:25-27क)। दाऊद ने प्रार्थना की, ''हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा ...'' (भजन संहिता 63:1)। मूसा ने इस्राएलियों को बताया कि ''यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो'' (व्यवस्थाविवरण 4:29)।[1]

इस पाठ में हमें ऐसे लोगों का एक समूह मिलेगा, जिन्होंने प्रभु को ''अपने पूरे मन और सारे जीव से'' ढूंढ़ा (2 इतिहास 15:12)। मैंने लगभग यह कह दिया है कि ''*तीन* लोगों ने प्रभु को ढूंढ़ा'' ज़्योंकि उनका उल्लेख करते समय ''तीन'' की संज़्या का ही इस्तेमाल होता है। आपने अनुमान लगा लिया होगा कि मैं उन तीन पण्डितों की बात कर रहा हूं, जो बैतलहम में यीशु को दण्डवत करने आए थे।

यह प्रवचन आसान है: मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि उन पण्डितों ने यीशु को ढूंढ़ा, उन्होंने यीशु को पाया, उन्होंने यीशु को सिजदा किया, जिसे उनके जीवन आशीषित हो गए थे।[2] मैं यह भी सुझाव देना चाहता हूं कि मुझे और आपको उनके उदाहरण का अनुसरण करना आवश्यक है। ज़्योंकि यह कहानी पहले ही काफ़ी प्रसिद्ध है, इसलिए मैं उन बातों पर अधिक ज़ोर नहीं दूंगा जो पहले से प्रचलित हैं,[3] परन्तु मैं यह प्रश्न अवश्य पूछूंगा कि ''ज़्या हम उनके जैसे बुद्धिमान हैं?''[4]

उन्होंने यीशु को ढूंढ़ा (आयतें 1-9, 11, 13)

ज्योतिषी (The Magi)

> हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे, कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? ज़्योंकि, हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और

उस को प्रणाम करने आए हैं (आयतें 1, 2)।

उन लोगों पर चर्चा करने के लिए, जिन्होंने यीशु को ढूंढ़ा हमें चाहिए कि कुछ समय दें। उन पण्डितों या बुद्धिजीवियों के बारे में इतनी परज़्पराएं पनप गईं हैं कि मज़ी 2 अध्याय के वे मूल दर्शनार्थी अलोप से हो गए लगते हैं।[5]

उन्हें ''ज्योतिषी'' (magi) कहते हैं।[6] ''मेजी'' वह शज़्द है, जिससे अंग्रेज़ी के ''मैजिक'' और ''मैजोशियन'' शज़्द बने हैं। उस समय, magi शज़्द से किसी के ज्ञान और अनुभव का पता चलता था, इसलिए हम कई बार उन्हें ''पण्डित'' भी कहते हैं। आज के मापदण्डों के अनुसार, विज्ञान और अन्धविश्वास का मेल होने के कारण उनका ज्ञान त्रुटिपूर्ण था। फिर भी बुद्धि के लिए वे लोग प्रतिष्ठित थे और कभी-कभी राजाओं के सलाहकारों के रूप में भी काम करते थे।

यह विचार प्रसिद्ध है कि ये तीन ज्योतिषी थे-शायद इसलिए ज़्योंकि बाद में तीन उपहारों का उल्लेख है (आयत 11), परन्तु तीन उपहार कुछ या कई लोगों द्वारा भी दिए जा सकते हैं। ''ज्योतिषी'' या magi शज़्द बहुवचन में है, इसलिए हम मानते हैं कि कम से कम दो लोग थे, परन्तु वे एक दर्जन भी हो सकते हैं और इससे अधिक भी।[7]

ज्योतिषियों के ''पूर्व से'' होने की बात कही गई है, परन्तु यह नहीं बताया गया कि वे किस देश से आए थे। उनके उपहारों से कुछ विद्वानों का मानना है कि वे अरब से आए थे। फ़ारस (आधुनिक ईरान) एक अच्छा अनुमान हो सकता है, ज़्योंकि वहां उस समय ज्योतिष काफी उन्नति पर था। साफ़ कहें, तो हम नहीं जानते कि वे किस देश से आए थे। पलिश्तीन के पूर्व में अरब, फ़ारस, बेबिलोन, पूरे मैसोपोटामिया का इलाका, भारत और दूसरे देश हैं।

उन लोगों के बारे में एक बात स्पष्ट है कि वे अन्यजाति थे। उन्होंने उसे ''हमारा राजा'' नहीं, बल्कि ''यहूदियों का राजा'' कहा। जब बालक यीशु को मन्दिर में ले जाया गया, तो बुज़ुर्ग शमौन ने कहा था कि वह ''अन्यजातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति'' होगा (लूका 2:32)।[8] पण्डितों की कहानी मसीह के जन्म के विश्वव्यापी प्रभाव को रेखांकित करती है। यीशु केवल इस्राएल का ही नहीं, बल्कि ''जगत का उद्धारकर्ज़ा'' भी होना था (यूहन्ना 4:42)।

बहुत सी बातें हैं, जो हम इन लोगों के बारे में नहीं जानते, परन्तु उनके विशेष उद्देश्य के बारे में हम अवश्य जानते हैं कि वे ''यहूदियों के राजा'' की खोज में आए थे। उनकी सच्ची बुद्धि दशकों के उनके अध्ययन में या प्राकृतिक संसार की उनकी समझ में नहीं, बल्कि सचमुच में महत्वपूर्ण बातों की समझ में है। आप बहुत समझदार या बहुत पढ़े-लिखे हों या नहीं, यदि आप ''राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु'' (प्रकाशितवाज़्य 19:16) को सच्चे मन से ढूंढ़ते हैं, तो आप बुद्धिमान या पण्डित ही हैं!

उद्देश्य

ज्योतिषी इतनी दूर से, इतनी कठिन यात्रा करके पलिश्तीन में ज़्यों आए? ज़्या वे अपना सामान दिखाने के लिए फेरी लगाने आए थे? नहीं। ज़्या वे भूमध्य सागर में तैरने या मृत सागर पर तैरने (ज़्लोट करने) की इच्छा से, पर्यटकों के रूप में आए थे? नहीं। ज़्या वे राजा हेरोदेस के साथ अच्छे सज़्बन्ध बनाने के लिए राजदूत बनकर आए थे? नहीं। यरूशलेम में पहुंचकर, उन्होंने पूछा था, ''यहूदियों का राजा, जिसका जन्म हुआ है, कहां है?'' (मज़ी 2:2क)। पलिश्तीन में उनके आने का एकमात्र उद्देश्य था, मसीहा का दर्शन करना।

संक्षेप में, वे उसे *ज़्यों* देखना चाहते थे? उन्होंने कहा, ''हम ... उसको *प्रणाम* करने आए हैं'' (आयत 2ख)। वह केवल ''यहूदियों का राजा'' ही नहीं था, बल्कि उनका भी राजा था। वे सैकड़ों-हज़ारों मील चलकर उसे सिजदा या प्रमाण करने आए हैं।

यदि हम भी उनकी तरह ही बुद्धिमान हैं, तो हमें यह सीखना आवश्यक है कि यीशु को पाने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी कम है। परमेश्वर ''ने हमें *मसीह में* स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)। वे आशिषें और कहीं नहीं मिलतीं। परमेश्वर आज भी उन निष्कपट मनों को ढूंढ़ रहा है, जो अपने जीवन को दूसरों के लिए प्रेरणा बनाने के लिए प्रभु की खोज में हैं। आज भी वह ''अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)।

तरीका

उन ज्योतिषियों और उनके मिशन की कुछ समझ आने पर हम हैरान होते हैं, कि वे अपना मिशन कैसे पूरा कर पाए? वे अन्यजाति थे। उन्हें यहूदियों के राजा का पता कैसे चला? उसका पता चल जाने के बाद, उन्हें कैसे पता चला कि उसे किस प्रकार ढूंढ़ना है?

कुछ लोगों का अनुमान है कि उन्हें मसीह का पता अपने यहूदी पड़ोसियों से चला था। हो सकता है। उस समय, यहूदी संसारभर में पाए जाते थे।[9] बाहर के देशों में उन्होंने न केवल अपना व्यापार बढ़ा लिया था, बल्कि अपने विश्वास का प्रचार भी किया था।[10]

इस सवाल पर कि उन पण्डितों को यीशु को ढूंढ़ने की बात कैसे पता चली, एकमात्र संकेत ''हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है'' शज़्दों में है। कुछ लोगों का विश्वास है कि वह तारा एक प्राकृतिक वस्तु थी। वे लोग नकली विज्ञान, ज्योतिष को मानते थे। पुराना नियम ज्योतिष की हंसी उड़ाता है (यशायाह 47:13-15; दानिय्येल 1:20; 2:27; 4:7; 5:7, 8) और परमेश्वर के लोगों को इसमें भागीदार होने से मना करता है (यिर्मयाह 10:1, 2)। तो भी बहुत से लोगों का विश्वास है कि उन पण्डितों की ज्योतिष में दिलचस्पी ही उन्हें पलिश्तीन में खींच लाई। उन ज्योतिषियों को पश्चिम में जाने के लिए प्रेरित करने वाली संक्षिप्त स्वर्गीय चेतावनी पर कई किताबें लिखी गई हैं।[11]

उन पण्डितों को मसीहा के बारे में पता चलने और एक विशेष तारे के पीछे चलने के उनके निर्णय पर सभी अनुमानों की समीक्षा करने के बाद, मेरा निष्कर्ष कई वर्ष पूर्व के जे. डज़्ल्यू मैज़्गर्वे के निष्कर्ष से मेल खाता है। मैज़्गर्वे ने उन सभी सज़्भावित प्रभावों की सूची

बनाई, जिनका प्रभाव उन पण्डितों पर पड़ा था और यह निष्कर्ष निकाला था, ''पर इन सब को मिलाकर भी ज्योतिषियों के आने का कारण नहीं माना जा सकता। उन्हें प्रत्यक्ष तौर पर परमेश्वर की अगुआई मिली थी, और किसी और बात ने उन्हें प्रभावित नहीं किया होगा।''[12]

इस बात को समझें कि, बेशक पुराना नियम यहूदियों के साथ परमेश्वर के सम्बन्धों पर केन्द्रित है, परन्तु परमेश्वर ने गैर यहूदी संसार को भी पूरी तरह से नज़रअन्दाज़ नहीं किया था। अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के काम करने के बारे में हमें बहुत कम मालूम था, ज़्योंकि पुराने नियम का उद्देश्य यह बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने एक जाति (इस्राएल) को तैयार किया, जिसमें से उसके पुत्र ने आना था। तो भी, समय-समय पर पुराना नियम यहूदियों के अन्यजाति पड़ोसियों के लिए परमेश्वर की चिंता की झलक देता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने एक अन्यजाति नगर, नीनवे में योना को भेजा था (योना 1:1, 2)। परमेश्वर ने मसीहा की स्पष्ट भविष्यवाणी करने के लिए बिलाम नामक एक गैर यहूदी का भी इस्तेमाल किया था: ''याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा'' (गिनती 24:17)। इन पण्डितों की कहानी अन्यजातियों में परमेश्वर की दिलचस्पी का एक और कारण लगती है।

यकीन से हम केवल यही कह सकते हैं कि *किसी तरह* परमेश्वर ने यह सुनिश्चित किया कि उन ज्योतिषियों ने यीशु के जन्म का पता चल जाए, और *किसी तरह* उसने उन्हें सूचित किया कि वे मसीहा उन्हें कैसे मिल सकता है। बाद में, परमेश्वर ने उन पण्डितों के साथ स्वप्न में बात की (मत्ती 2:12)। शायद प्रभु ने यहूदियों के राजा के बारे में प्रारज़िभक सुचना देने का ऐसा ही ढंग इस्तेमाल किया था।

यदि प्रमाण की आवश्यकता हो कि परमेश्वर ही इन पूर्वी साधुओं की अगुआई कर रहा था, तो तारा अपने आप में सबूत है। जिस प्रकार, ज्योतिषियों के आगे-आगे तारा चला वैसे कोई पिण्ड नहीं चलता अर्थात कोई भी तारा उज़र से दक्षिण तक नहीं चलता, और कोई तारा रुककर पृथ्वी की किसी जगह ''के ऊपर ठहर'' नहीं जाता (मत्ती 2:9)।

इसे हम उन लोगों के लिए जो आज प्रभु को ढूंढ़ते हैं, प्रासंगिकता बना सकते हैं। सबसे पहले मेरा सुझाव होगा कि उद्धारकर्ज़ा को आपके ढूंढ़ने में परमेश्वर की दिलचस्पी उतनी ही है, जितनी नन्हें राजा को ढूंढ़ने के लिए उन पण्डितों में थी। इसके अलावा मैं यह सुझाव दूंगा कि, यदि आप उद्धारकर्ज़ा को ढूंढ़ना चाहते हैं, तो वह उसे ढूंढ़ने में (आश्चर्यकर्म से नहीं, बल्कि प्रबन्ध जुटाकर) आपकी सहायता करेगा।

परन्तु यीशु को ढूंढ़ने के लिए *परमेश्वर की अगुआई को स्वीकार* करना आवश्यक होगा। ''मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं'' (यिर्मयाह 10:23)। वाद-विवाद आवश्यक है (यशायाह 1:18), परन्तु यह प्रकाशन का स्थान नहीं ले सकता। ''ज़्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुज़्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुज़्हारी गति और मेरी गति एक सी है। ज़्योंकि मेरी और तुज़्हारी गति में और मेरे और तुज़्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है'' (यशायाह 55:8, 9)।

परमेश्वर की अगुआई को स्वीकार कर लेने के बाद, *उसी समय, उसके अनुसार चलने* को तैयार होना आवश्यक है। परमेश्वर द्वारा ज्योतिषियों को अपना संदेश देने के बाद (उसने जैसे भी दिया), वे हिचकिचाए नहीं। वे सैकड़ों मील की और वर्षों की थका देने वाली यात्रा पर चले गए।

एक और गुण जिसका उल्लेख होना आवश्यक है वह है परमेश्वर की अगुआई के अनुसार चलने के लिए, *विनम्र रहना।* अपने-अपने घरों से निकलने के समय उन पण्डितों को पता नहीं होगा कि उनकी मंजिल ज़्या है, उन्हें केवल इतना ही पता था कि उन्हें तारे के पीछे चलना है। यरूशलेम में पहुंचकर, उन्हें पता नहीं था कि आगे कहां जाना है। यह तो अच्छा है कि वे इतने घमण्डी नहीं थे जो किसी से रास्ता न पूछते। (हम में से कई लोग किसी नई जगह जाकर रास्ता पूछने में शर्म महसूस करते हैं।) विनम्रता प्रभु को ढूंढ़ने के लिए आवश्यक है।[13]

कहानी में वापस आते हैं, मुझे यह महत्वपूर्ण लगता है कि परमेश्वर ने उनकी यात्रा के सबसे महत्वपूर्ण निर्देश अपने वचन के द्वारा प्रकट किए थे। तारे ने उन्हें केवल यरूशलेम तक पहुंचाया था। उन्हें पवित्र शास्त्र से और जानकारी की आवश्यकता थी। पता है, ज़्या हुआ, जब हेरोदेस ने उन ज्योतिषियों के सवाल सुने, तो उसने यहूदी अगुओं को इकट्ठे किया और ''उनसे पूछा, मसीह का जन्म कहां होना चाहिए?'' (मत्ती 2:4)। उन्होंने उज़र दिया:

> यहूदिया के बैतलहम में[14]; ज़्योंकि भविष्यवज़्ताओं के द्वारा यों लिखा गया है। कि हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सब से छोटा नहीं; ज़्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा (आयतें 5, 6)।[15]

राजा के प्रश्न का उज़र ढूंढ़ने के लिए उन्होंने पवित्र शास्त्र में, मीका 5:2 में देखा।[16]

परमेश्वर के बारे में आपको बाइबल से बाहर से पता चल सकता है। वह संसार में सक्रिय है। वह संसार को सूर्य की रोशनी तथा वर्षा देता है (मत्ती 5:45)। ''आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1)। कुछ हद तक ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व'' उसकी सृष्टि के द्वारा समझे जा सकते हैं (रोमियों 1:20)। फिर भी यदि हम उसे ढूंढ़कर पाना चाहते हैं, तो अन्ततः हमें *पवित्र शास्त्र* के पास ही आना होगा (''होगा'' को अपने मन में रेखांकित कर लें)। पवित्र शास्त्र के बारे में यीशु ने कहा था, ''उसमें अनन्त जीवन तुज़्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है'' (यूहन्ना 5:39)।

इसी लिए याकूब ने लिखा, ''उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुज़्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है'' (याकूब 1:21)। पौलुस ने कहा कि केवल ''पवित्र शास्त्र ... तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए

बुद्धिमान बना सकता है'' (2 तीमुथियुस 3:15)। आपकी अगुआई के लिए परमेश्वर की ओर से आकाश में तारा नहीं आएगा, परन्तु उसने आपकी अगुआई के लिए अपनी पुस्तक में स्वर्गीय प्रकाशन दे दिया है। भजन लिखने वाले ने वचन को ''मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला'' कहा है (भजन संहिता 119:105)।

यदि हम उन ज्योतिषियों की तरह ही बुद्धिमान हैं, तो हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और जो कुछ इसमें कहा गया है, वही करने को तैयार रहना चाहिए। नया नियम हमें वह मार्ग दिखाता है, जिस पर प्रभु तक जाने के लिए हमें चलना अर्थात यीशु में विश्वास लाना (यूहन्ना 3:16); अपने पापों से मन फिराना (लूका 13:3); यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करना (मत्ती 10:32); बपतिस्मा लेना (पानी में डुबकी से) (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) आवश्यक है। बाइबल हमें बताती है कि बपतिस्मा लेने से हम ''मसीह में'' आ जाते हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27), और मसीह में होना ही तो हमारा लक्ष्य है; उसके साथ हम रहें, यही तो हमारी मंज़िल है!

उन्होंने यीशु को पा लिया (आयतें 7-11)

ज्योतिषियों को यीशु मिल गया। आप जिसे ढूंढ़ रहे हों उसे पा लेना हमेशा रोमांचित करने वाला होता है, चाहे यह कोई अज्ञात लक्ष्य हो या कोई कुंजी, जो आपसे कहीं रखी गई हो।[17] परन्तु उद्धारकर्ता को पाने के रोमांच की तुलना किसी वस्तु से नहीं की जा सकती!

मसीह के जन्म से कई साल पहले, दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को बताया था, ''यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा'' (1 इतिहास 28:9)। ज़्योंकि उन ज्योतिषियों ने यीशु को सही ढंग से और शुद्ध मन से ढूंढ़ा, इसलिए परमेश्वर ने यह सुनिश्चित किया कि वह उन्हें मिल जाए।

जैसे ही इन पण्डितों को बताया गया कि मसीह का जन्म कहां हुआ है, वे यरूशलेम से दक्षिण की ओर चल पड़े (आयतें 7-9क)। यरूशलेम की ओर पांच मील निकल जाने पर, तारा फिर से दिखाई दिया।[18] ''उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए'' (आयत 10)। उन्हें पता था कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह सही है। तारा ''उनके आगे-आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया'' (आयत 9)। अन्त में उन्होंने ''उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा'' (आयत 11क)।

जिसकी खोज वे इतने समय से कर रहे थे, उसे पा लेने पर उनके आनन्द की कल्पना करने की कोशिश करें। कई साल पहले लोग एक खोज करने पर, ''यूरेका!'' कहते हुए चिल्ला उठे थे। (*यूरेका* एक यूनानी शब्द है, जिसका अर्थ है ''मुझे [यह] मिल गया!'') पता नहीं वे ज्योतिषी ज़्या चिल्लाए होंगे या बालक को मरियम की गोद में देखकर वे कुछ बोले भी होंगे या नहीं। परन्तु मुझे विश्वास है कि उनकी सारी थकान उतर गई होगी और उन्हें अपनी भेंटें बड़ी नहीं लगी होंगी। बल्कि उनके मन अपनी खोज के सफलतापूर्वक पूरा होने पर आनन्द से भर गए होंगे।

यदि आप सही ढंग से और सच्चे मन से प्रभु को ढूंढ़ते हैं, तो उसे पाने के लिए

परमेश्वर आपकी सहायता अवश्य करेगा। फिर मसीह में बपतिस्मा लेने के बाद, आप फिलिप्पुस की तरह ही कह सकेंगे कि ''जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यवज़्ताओं ने किया है, वह [मुझ को] मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है'' (यूहन्ना 1:45)। उन पण्डितों की तरह, आप ''ऐसे आनन्दित और मगन'' हो सकते हैं, ''जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है'' (1 पतरस 1:8)!

उन्होंने यीशु को दण्डवत किया (आयतें 2,11)

यीशु को पाकर, उन ज्योतिषियों ने उसे दण्डवत किया। उन्होंने यहूदियों के राजा को इसलिए नहीं ढूंढ़ा था कि वे इस बात पर गर्व कर सकें कि उन्होंने एक ईश्वरीय पहेली बूझ ली है। उन्होंने कहा था कि पलिश्तीन में वे ''उसको *प्रणाम* करने आए हैं'' (आयत 2)। वास्तव में, उन्होंने उसे पाकर ''मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया'' (आयत 11ख)। राजाओं के राजा को जो महिमा देनी चाहिए थी, उन्होंने दी (प्रकाशितवाज़्य 19:16)।[19]

परन्तु उन्होंने उसे केवल प्रणाम या दण्डवत ही नहीं किया, बल्कि ''अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई'' (मज़ी 2:11ग)।[20] कुछ लोग इन उपहारों में सांकेतिक महत्व देखते हैं: सोना राजा के लिए उपयुज़्त उपहार था। जैसे नाम से ही पता चलता है, लोबान धूप के रूप में इस्तेमाल होता था[21]; जो याजक के लिए उपयुज़्त उपहार था। गन्धरस का इस्तेमाल गाड़ने के लिए शव को तैयार करते वज़्त किया जाता था (यूहन्ना 19:39); ये उपहार उद्धारकर्ज़ा के लिए, जिसने हमारे पापों के लिए मरना था, उपयुज़्त था। यीशु राजा भी था, याजक भी और उद्धारकर्ज़ा भी, परन्तु इन उपहारों को शायद इसलिए चुना गया, ज़्योंकि कीमती होने के बावजूद, उन्हें लज़्बे सफ़र में उठाकरा ले जाना आसान था।[22]

इन उपहारों का वास्तविक महत्व इस बात में नहीं है कि उनसे ज़्या अर्थ निकलता था, ज़्योंकि यह तो उन पण्डितों की अपने राजा के प्रति श्रद्धांजलि व्यज़्त करने के लिए था। सच्ची आराधना तथा भेंट को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।[23] पुराने नियम में बलिदान होते थे, और नये नियम में हर सप्ताह के पहले दिन स्वेच्छा से भेंटें दी जाती हैं (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 9:7)। कई बार आराधना में दान देने के समय शोर बढ़ जाता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि कुछ लोग भेंट को आराधना के महत्वपूर्ण भाग के रूप में नहीं देखते, परन्तु है यह भी उतना ही महत्वपूर्ण।

ज़्या आपके पास प्रभु को भेंट करने के लिए सोना, लोबान या गन्धरस नहीं है? तो फिर आप उसे वही दें, जो आपके पास सबसे अच्छा है। पहले तो, अपने आप को दें (2 कुरिन्थियों 8:5; देखें 12:1, 2); फिर, वह दें जो आपका है; उसे हमेशा अपनी उज़म वस्तुएं ही दें। दाऊद को परमेश्वर के सामने ऐसी भेंट ले जाना अच्छा नहीं लगा, जिसकी उसे कोई कीमत न देनी पड़ी हो (2 शमूएल 24:24)।

उन ज्योतिषियों को जब यीशु मिल गया, तो उन्होंने उसे दण्डवत किया और उसे उपहार दिए। ज़्या हम उनकी तरह बुद्धिमान हैं?[24]

सारांश (आयतें 10,12)

उन ज्योतिषियों के बारे में बहुत सी बातें हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। यरूशलेम में उनके आने से पहले हम उनके बारे में बहुत कम जानते हैं। वहां से अपने देश को चले जाने के बाद हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते। बाइबल के पन्नों पर वे एक यादगारी दृश्य के लिए प्रकट होते हैं और फिर अलोप हो जाते हैं। परन्तु एक तथ्य हम जानते हैं कि प्रभु को ढूंढ़ने के कारण उनके जीवन आशीषित हो गए थे। आयत 10 याद रखें: ''उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए।'' मूल शास्त्र में मूल अनुवाद कहता है कि ''वे आनन्द से आनन्दित हुए।'' यह संकेत देते हुए कि वे आनन्द से *भर गए* थे, लेखक ने एक इब्रानी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया। उन पण्डितों की प्रसन्नता के बारे में जानने के लिए हमारे लिए इतना ही काफी है, परन्तु वचन में ''अति'' शब्द जोड़ा गया है। ज्योतिषी अति प्रसन्न थे कि उन्होंने प्रभु को ढूंढ़ लिया है! बैतलहम में उस छोटे से घर से निकलकर, अपने आगे गए चरवाहों की तरह (लूका 2:17, 18) उन्होंने उस नन्हें राजा के दर्शन की बात सब को बताई होगी।

यदि आप उद्धारकर्ता को ढूंढ़ते हैं और वह आपको मिल जाता है, तो आपका जीवन भी आपकी कल्पना से कहीं अधिक आशीषित हो जाएगा। पौलुस ने लिखा है, ''धन्य वे हैं, ... जिन के पाप ढांपे गए'' (रोमियों 4:7)। उसने, फिर कहा, ''जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं'' (1 कुरिन्थियों 2:9)।

जिन पदों का हम अध्ययन कर रहे हैं, उनमें यीशु के बारे में तीन अलग-अलग व्यवहार वाले समूह हैं: पण्डितों अर्थात बुद्धिमान लोगों ने मसीह को दण्डवत करने के लिए उसे ढूंढ़ा। हेरोदेस ने यीशु को मारने के लिए ढूंढ़ा। धार्मिक अगुवों ने यीशु को ढूंढ़ने का कोई प्रयास नहीं किया, चाहे वह केवल कुछ ही मील की दूरी पर था। इन तीनों तरह के लोग आज हमारे बीच भी हैं: ऐसे लोग हैं, जो यीशु का सामना और उसका विरोध करते हैं, क्योंकि वे उसे अपने स्वार्थी जीवनों के लिए खतरा मानते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो भूल जाते हैं कि यीशु कौन है और किस प्रकार से उनके जीवनों को आशीषित कर सकता है। परन्तु धन्यवाद हो परमेश्वर का कि ऐसे भी कुछ लोग हैं, जो उसे ढूंढ़ते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप उसे ढूंढ़ने वाले लोगों में से एक हैं।[25]

टिप्पणियां

[1]प्रभु को ढूंढ़ने के बारे में कई पद हैं। ऊपर दिए गए इन पदों के अलावा, एज्रा 8:22; भजन संहिता 10:4; 14:2 भी मेरा ध्यान आकर्षित करते हैं। [2]यह प्रचार करते हुए, मैंने जोड़ दिया, ''मैं अधिकतर समय पहली बात पर ही दूंगा, इसलिए पन्द्रह-बीस मिनट तक यदि मैं इसी पर बोलता रहूं और दूसरी बात पर न आऊं तो घबराएं नहीं!'' [3]यदि आपके सुनने वाले इस कहानी से परिचित *नहीं* हैं, तो आप उन्हें पहले यह कहानी विस्तार से बताएं। [4]''द वैल्कम ऑफ़ द किंग'' में जिन ज़्लोर ने बताया है कि उन पण्डितों ने क्या किया था। फिर, प्रत्येक भाग के अन्त में, उन्होंने पूछा है ''क्या हम उनके जैसे बुद्धिमान हैं?'' (''मैथ्यू:

इंट्रोड्यूसिंग द किंग,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* [अंग्रेज़ी संस्करण, जुलाई 1989]: 6-8)। [5]सातवीं शताब्दी की दंतकथा में इन तीन ज्योतिषियों के नाम, और यह कि वे किस-किस देश से थे, और क्या-क्या उपहार लाए थे, बताया जाता है। जैसे पहले एक पाठ में सुझाव दिया गया था, प्रकृति को भौतिक रिक्तता से घृणा है और यह इसे भरने की जल्दी करती है। मनुष्य जानकारी की रिक्तता से घृणा करते हैं। जब वे इसे ज्ञान से नहीं भर सकते, तो अनुमान से अवश्य भर देते हैं। [6]ज्योतिषियों पर और जानकारी के लिए ''हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ'' पाठ देखें। [7]एक प्राचीन तहखाने के चित्र में दो ज्योतिषी दिखाए गए हैं, जबकि एक प्राचीन (बाइबल से बाहर की) कलीसियाई परम्परा में सुझाव दिया जाता है कि ज्योतिषियों की संख्या बारह थी। [8]इस तथ्य के सम्बन्ध में कि मसीहा ने सब लोगों को आशीष देनी थी, देखें यशायाह 42:1, 6; 49:6, 22; मत्ती 12:18-21. [9]प्रेरितों 2:9 में यहूदियों के पलिश्तीन के कुछ पूर्वी क्षेत्रों में होने का उल्लेख है। [10]मत्ती 23:15 एक नकारात्मक पद है, परन्तु इसमें यहूदियों के विश्वास से फिरने की गतिविधि की बात है। जोसेफस के अनुसार, यह विचार कि संसार पर शासन करने वाला राजा यहूदिया से निकलेगा, दूर-दूर तक (कुछ हद तक) फैला हुआ था।

[11]अनुमानों में ग्रहीय संयोग, नवतारे और धूमकेतू शामिल हैं। इनमें से कोई भी इस तारे या इसके कार्य के बाइबल के विवरण से मेल नहीं खाता। [12]जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप वाई. पेंडलटन, *द फ़ोरफोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 42. [13]परमेश्वर को भाने के लिए दीन होने की आवश्यकता पर और बहुत सी आयतों में से याकूब 4:6 और 1 पतरस 5:5 हैं। [14]अतिरिक्त वाक्यांश ''यहूदिया के'' इस नगर को पलिश्तीन में पाए जाने वाले एक और बैतलहम से अलग करता है (यहोशू 19:15, 16; न्यायियों 12:8, 10)। [15]नाम ''बैतलहम'' का अर्थ है ''रोटी का घर।'' ''जीवन की रोटी'' के जन्म स्थान के रूप में यह नाम उपयुक्त लगता है (यूहन्ना 6:48)। [16]शास्त्रियों और याजकों ने 2 शमूएल 5:2 से एक और वाक्यांश जोड़ लिया था। [17]ढूंढ़ने पर आप कोई अपना उदाहरण देना चाहते हैं तो दे सकते हैं। लूका 15 अध्याय हमें एक चरवाहे के आनन्द और उस स्त्री के आनन्द के बारे में बताता है, जिसे उसका खोया हुआ सिक्का मिल गया था। [18]वचन से इसका अर्थ समझ आता है। तारे के बारे में बहुत कुछ है, जो हम नहीं जानते, जैसे, वह हर रात दिखाई देता था या केवल कभी-कभी। [19]''प्रणाम किया'' का अर्थ परमेश्वर को या मनुष्य को श्रद्धांजलि देना हो सकता है। अंग्रेज़ी में ''आराधना'' शब्द दिया गया है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि उन ज्योतिषियों ने यीशु की उपासना उसे परमेश्वर जानकर की या राजा मानकर। हिन्दी में मूल भाषा के अनुसार मत्ती में ''परमेश्वर को श्रद्धांजलि'' का स्वीकृत अर्थ देते हुए ''मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया'' दिया गया है-और लगता है कि उन्होंने ऐसे ही किया होगा। [20]तीन उपहारों पर और जानकारी के लिए, ''हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ'' पाठ देखें।

[21]लोबान का इस्तेमाल वेदी में इस्तेमाल किए जाने वाले धूप में किया जाता था (निर्गमन 30:34-38)। [22]परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध में, यूसुफ इन उपहारों को आसानी से मिस्र में ले गया होगा। [23]किसी ने कहा है कि बिना आराधना के भेंट दी जा सकती है, परन्तु बिना भेंट के आराधना नहीं हो सकती; क्योंकि इसके लिए आपको महिमामय परमेश्वर को अपना मन, हृदय और आत्मा प्रस्तुत करनी आवश्यक है। [24]इस शृंखला का उल्लेख करने के लिए आप को समय की आवश्यकता हो सकती है: परमेश्वर ने उन पण्डितों को कैसे चौकस किया और वे कैसे दूसरे मार्ग से वापस चले गए (मत्ती 2:12)। कुछ प्रचारक यहां एक अतिरिक्त प्रासंगिकता बनाते हैं कि जैसे वे ज्योतिषी ''दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए'' (मत्ती 2:12), वैसे ही मसीही बनने के बाद हमें भी दूसरे मार्ग से जाना आवश्यक है। अन्य शब्दों में, हमारा जीवन बदल जाना चाहिए। [25]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए, आपको चाहिए कि इस पर विचार करें कि मसीही बनने के लिए क्या करना आवश्यक है। लोगों को प्रोत्साहित करें कि जितनी जल्दी हो सके, वे प्रभु की आज्ञा मानें। इस प्रस्तुति की प्रकृति के कारण, सुनने वालों को, जो बाइबल से जुड़े उन प्रश्नों के बारे में पूछना चाहते हैं कि आप उद्धारकर्ता की उनकी खोज में उनकी सहायता कर सकें, उन्हें प्रोत्साहित करना भी ठीक होगा।